शोध-प्रारूप

मुण्डारी गीतों में वाद्ययंत्र : एक अध्ययन

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय
राँची विश्वविद्यालय, राँची

से पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध-प्रारूप

वर्ष 2024

शोध निर्देशक

डॉ० खातिर हेमरोम
सहायक प्राध्यापक (मुण्डारी)
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
मारवाड़ी कॉलेज, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

शोधार्थी

लेखन प्रकाश मुण्डा
यू०जी०सी० नेट/जे०आर०एफ०
एम०ए० (मुण्डारी)
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
(मुण्डारी)
डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी
विश्वविद्यालय, राँची।

मुण्डारी गीतों में वाद्ययंत्र : एक अध्ययन

भूमिका :

भारत की प्राचीन सांस्कृतिक पर गौर करने से ज्ञात होता है कि हर समाज की अपनी संस्कृति रही है, जिसमें से मुण्डा जनजातियों की अपनी प्राचीन संस्कृति है। परन्तु मुण्डा जनजातियों की प्राचीन संस्कृति के अलावा भारतीय प्राचीन संस्कृति समाज में भिन्न है।

मुण्डा जनजातियों की प्राचीन संस्कृति हड़प्पा सभ्यता 'मोहनजोदड़ो' यूपी, कालिबंगा एवं रोहतासगढ़ होते हुए झारखण्ड राज्य में वर्ष 64 ई० लगभग में आ बसे और यहाँ निवास करने लगे। मुण्डा जाति छोटानागपुर के मूल निवासियों में एक मानी जाती है। मुण्डा का अर्थ गांव का मूल व्यक्ति या मुखिया होता है।

मुण्डा जाति अपने को होड़ो कहते हैं, होड़ो का अर्थ है 'मानव'। इस होड़ो शब्द की उत्पत्ति पृथ्वी के समस्त जीव-जन्तुओं की सृष्टि के साथ जुड़े हुए हैं। मुण्डा जनजातियों की प्राचीन संस्कृति, गीत-संगीत, भाषा संस्कृति एक-दूसरे के पूरक हैं। मानव एवं प्रकृति के बीच साझेदारी सहयोग और जीवंतता का जीवन दर्षन हमारे पूर्वजों की देन है।

प्रेरणा :-

मेरा जन्म झारखण्ड राज्य की राजधानी राँची के उत्तर-पश्चिमी घनघोर जंगल के मुण्डा गांव में हुआ और मुण्डा भाषा परिवार में होने के कारण मुण्डारी बोली, संस्कृति एवं गीत-संगीत से जुड़ाव रहा है। बचपन से ही मुण्डाओं का पारंपरिक वाद्य यंत्रों से लगाव रहा है। गांव के अखाड़े में जब भी पर्व-त्योहारों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम होता था, तब मेरे पिताजी मुझे भी साथ ले जाया करते थे तथा डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची में स्नातकोत्तर (मुण्डारी) करने के बाद मुझे लगा कि **'मुण्डारी गीतों में वाद्ययंत्र : एक अध्ययन'** की जरूरत है। जिससे विलुप्त पारंपरिक वाद्ययंत्रों के बारे में समाज के भावी पीढ़ी को प्रेरणा मिल सके।

परिकल्पना :-

किसी विषय पर शोध की चर्चा करने से पहले मन में गहन सोच-विचार उत्पन्न होती है कि शोध कैसा होना चाहिए? तब मैंने मन में परिकल्पना किया कि मुण्डाओं का पारंपरिक वाद्‌ययंत्र धीरे-धीरे लुप्त हो रहे हैं। वर्तमान में तरह-तरह के वाद्‌ययंत्र इनसे प्रभावित हो रहे हैं। इसलिए मैंने सोचा कि क्यों न **'मुण्डारी गीतों में वाद्‌ययंत्र : एक अध्ययन'** पर शोध कार्य किया जाय।

मैं डॉ० खातिर हेमरोम के निर्देशन में इस विषय पर शोध कार्य करने का मन बनाया है। इसके माध्यम से समाज के मुण्डारी गीतों में वाद्‌ययंत्रों के विलुप्त होने से बचाया जा सकता है और जनमानस के प्रति रूचि जागृत हो सकता है।

शोध का उद्‌देश्य :-

किसी शोध कार्य प्रारंभ करने के पूर्व शोध से संबंधित उद्‌देश्य निर्धारित की जाती है :

1. मुण्डारी गीतों में वाद्‌ययंत्रों के उद्‌भव एवं विकास का अध्ययन करना।
2. शुशिर वाद्‌ययंत्रों का लोकगीतों में उपयोगिता।
3. मुण्डारी गीतों में वाद्‌ययंत्रों का गहन अध्ययन करना।
4. मुण्डारी गीतों में पारंपरिक वाद्‌ययंत्रों का शोधार्थियों के लिए सूचना संकलन, संग्रहण एवं विश्लेषण का मार्ग प्रशस्त करना।
5. घन वाद्‌ययंत्र लय मिलन में भूमिका।
6. मुण्डारी गीतों में वाद्‌ययंत्रों पर सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक जीवन के प्रभाव को देखते हुए उसका सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत करना।
7. ताल वाद्‌ययंत्र का लोकगीत के साथ-साथ ताल को गति देना।

समाज पर शोध का प्रभाव :-

1. मुण्डारी गीतों में वाद्‌ययंत्रों का लोकमानस संस्कृति पर उसका प्रभाव को दर्शाने में मदद मिलेगा।
2. इससे मुण्डारी गीतों में पारंपरिक वाद्‌ययंत्रों का महत्व बढ़ेगा।
3. मुण्डारी भाषा के शोधार्थियों को मुण्डारी गीतों में वाद्‌ययंत्रों पर शोध हेतु प्रोत्साहन मिलेगा।
4. निज भाषा प्रेम एवं अपनी संस्कृति के प्रति लोगों का रुझान बढ़ेगा।

5. भाषा-सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक, शैक्षणिक आदि क्षेत्र से संबंधित अन्य झारखण्डी भाषाओं में शोध हेतु प्रेरणादायक साबित होगा।

शोध विधि :-

प्रस्तावित शोध प्रबंध को पूर्ण करने हेतु निम्नांकित शोध विधियों को अपनाया जाएगा।

1. अवलोकन विधि
2. साक्षात्कार विधि
3. प्रश्नावली विधि
4. विश्लेषण एवं तुलनात्मक विधि
5. सर्वेक्षण
6. चित्रावली विधि का प्रयोग।

संभावित अध्याय :-

भूमिका

प्रथम अध्याय

मुण्डारी गीतों का सामान्य परिचय

(1) गीतों का सामान्य परिचय

(2) मुण्डारी गीतों में वाद्ययंत्रों का सामान्य परिचय

- क. इतिहास
- ख. उद्‌भव एवं विकास
- ग. क्षेत्र विस्तार
- घ. जनसंख्या एवं बनाने वाली जातियाँ

द्‌वितीय अध्याय

मुण्डारी गीतों में वाद्‌ययंत्रों की अवधारणा

- क. भौगोलिक अवधारणा
- ख. सामाजिक अवधारणा
- ग. आर्थिक अवधारणा
- घ. दार्शनिक अवधारणा
- ङ. सांस्कृतिक अवधारणा

तृतीय अध्याय

वाद्‌य यांत्रिक भाषा का सामान्य परिचय

क. मुण्डाओं का लोक वाद्य

ख. लोक वाद्य की परिभाषा

ग. मुण्डाओं का लोक वाद्य के स्वरुप

1. तत वाद्य

2. अवनद्ध वाद्य

3. सुसिर वाद्य

4. घन वाद्य

<u>चतुर्थ अध्याय</u>

मुण्डारी गीतों में वाद्ययंत्रों की साधना

क. तत साधना

ख. कंठ साधना

ग. स्वर साधना

<u>पंचम अध्याय</u>

मुण्डाओं के लोक जीवन में बजाये जाने वाले मुख्य वाद्ययंत्र

क. ढोल (डुलकी)

ख. नगड़ा (नागेरा)

ग. बांसुरी (रूतु)

घ. बनम

ङ. पेरेड़ेंद

च. टुईला

छ. भेंर

ज. दुमङ

<u>षष्ठ अध्याय</u>

मौसम एवं नेग के आधार पर मुण्डारी गीतों में वाद्ययंत्रों का वर्गीकरण

क. ग्रीष्म ऋतु (जादुर, ओर जादूर, गेणा आड़ान्दि, चिटिद, जापि)

ख. वर्षा ऋतु (हम्बल करम, राबल करम, केमटा, चलकुव करम, चिट्टिद करम, जापि)

ग. शीत ऋतु (मागे, ओर मागे, जरापि, जापि)

<u>सप्तम अध्याय</u>

मुण्डारी गीतों में वाद्ययंत्रों एवं ताल प्रयोजन का महत्व

क. ऐतिहासिक

ख. भौगोलिक
ग. सामाजिक
घ. धार्मिक
ङ. आर्थिक
च. नैतिक
छ. सांस्कृतिक
ज. भाषिक
झ. मनोरंजनात्मक

सारांश और निष्कर्ष

परिशिष्ट

1. आधार ग्रंथ की सूची
2. संदर्भ ग्रंथ की सूची
3. पत्र-पत्रिकाओं की सूची
4. साक्षात्कार सूची
5. चित्रावली।

नोट :- प्रस्तावित शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्तन किया जा सकता है।

शोध निर्देशक

डॉ० खातिर हेमरोम
सहायक प्राध्यापक (मुण्डारी)
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
मारवाड़ी कॉलेज, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

शोधार्थी

लेखन प्रकाश मुण्डा
यू०जी०सी० नेट/जे०आर०एफ०
एम०ए० (मुण्डारी)
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग (मुण्डारी)
डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी
विश्वविद्यालय, राँची।

आधार ग्रंथ की सूची :-

1. मुण्डा डॉ० सोहन, मुण्डारी लोकगीतों में राग एवं ताल का एक अध्ययन।
2. मानकी डॉ० जुरन सिंह, मुण्डा साहित्य में संस्कार : एक अध्ययन।
3. नाग डॉ० जय सिंह, मुण्डारी लोकगीतों में प्राकृतिक चित्रण।

4. टूटी डॉ० आश्रिता, मुण्डारी में पारंपरिक संगीत कला का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
5. नाग डॉ० समीर, मुण्डारी लोक गीतों का शास्त्रीय अध्ययन।
6. सुरिन डॉ० सिजरेन, झारखण्ड की प्रमुख भाषाओं में खेल, संस्कृति एवं गीत : एक अध्ययन।
7. सोय डॉ० विरेन्द्र कुमार, मुण्डारी भाषा के क्षेत्रीय रूपों की भासिक संरचना।

<u>संदर्भ ग्रंथ की सूची</u> :-

क्रम संख्या	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1.	अहमद, डॉ॰ जियाउद्दीन	झारखण्ड के आदिवासी	नरेन्द्र प्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, बंगाल रोड, दिल्ली	2008
2.	ओड़ेया, मेनस राम	सिंङबोंगा ओड़ो एटअः एटअः बोंगको	सत्य भारती, राँची	2007
3.	कण्डुलना, ब्रदर जोसेफ	मुण्डा कोअः संसकिर	छोटानागपुर मुण्डा ससंकिर संगोम समइति, लचड़ागढ़	2000
4.	केशरी, डॉ॰ दिनेश्वर प्रसाद	लोक साहित्य और संस्कृति	जयभारी प्रकाशन	2016
5.	केशरी, डॉ॰ दिनेश्वर प्रसाद	झारखण्डी भाषाओं की समस्याएँ और संभावनाएँ	-	1992
6.	गुप्ता, डॉ॰ किरण कुमारी	हिन्दी काव्य में प्रकृति चित्रण	-	1980
7.	तिवारी, डॉ॰ भोलानाथ	भाषा विज्ञान	किताब महल, 22ए, सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद	2007
8.	नेगी, डॉ॰ स्नेहलता	आदिवासी भाषा साहित्य और संस्कृति	-	2007
9.	मिंज, डॉ॰ दिवाकर	मुण्डा एवं उराँव की धार्मिक इतिहास	झारखण्ड झरोखा, रातु रोड, राँची	2010
10.		ससं-बा (पीले फूल)	भइयाराम मुण्डा फाउण्डेशन, राँची	2008
11.	मुण्डा, श्री काशीनाथ सिंह	गुड़राम	मुण्डारी साहित्य संग्रह एवं प्रकाशन समिति ग्रंथ	1980

12.	मुण्डा, डॉ० रामदयाल	सेलेद	रूम्बुल, दिरि ओड़ो, हतमा, राँची	2005
13.	मुण्डा, डॉ० रामदयाल	हिसिर	रूम्बुल, दिरि ओड़ो, हतमा, राँची	1972
14.	मुण्डा, भइया राम	दंड़ा जमा कन होड़ो कानि को	भइयाराम मुण्डा फाउण्डेशन, राँची	2011
15.	मुण्डा, दुलाय चन्द्र	बम्बरू	-	1975
16.	मुण्डा, सोमा सिंह	मुण्डा	-	1993
17.	मुण्डा, डॉ० रामदयाल	श्री बुदु बाबू और उनकी रचना	मुण्डारी भाषा साहित्य परिषद	1974
18.	मुण्डा, डॉ० रामदयाल एवं मानकी, रतन सिंह	आंड़ादि बोंगा	रूम्बुल, दिरि ओड़ाः, राँची	2001
19.	मुण्डा, डॉ० एम०एम०	कुदुम ओड़ो सोलको	-	2009
20.	मुण्डा, डॉ० रामदयाल	एआ नवा कानिको	सरस्वती प्रेस, उदयपुर, राजस्थान	1980
21.	मुण्डा, डॉ० रामदयाल	गोनोए पारोमेन बोंगा	सइल राकाब पुथि सेन्टर विराटी, कोलकाता	2003
22.	मुण्डा, डॉ० सत्यनारायण	झारखण्ड की विरासत एवं विकास	सइल राकाब पुथि सेन्टर विराटी, कोलकाता	2000
23.	डॉ० रूपाशुमाला	मुण्डा आदिवासियों की भाषाएँ और उनकी संस्कृति	-	-
24.	राय, शरतचन्द्र	द मुण्डा एण्ड देयर कंट्री	ज्ञान प्रकाशन हाउस	1972
25.	शर्मा, डॉ० विमला चरण	झारखण्ड की आदिम जनजाति	-	2014

26.	हस्सा, सागु	मुण्डा कोआ इतिहास	वीर भारत तलवार, हिन्दी विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची	1977
27.	त्रिगुणायत, श्री जगदीश	पुरना दुरङ	बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना	2000
28.	त्रिगुणायत, श्री जगदीश	सोसो बोंगा	बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना	1960
29.	सिंह, कुमार सुरेश	बिरसा मुण्डा और उनके आंदोलन	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2003
30.	तिर्की, सिकरादास	मुण्डारी लोक साहित्य में ऐतिहासिक तथ्य	राँची	2010

<u>पत्र-पत्रिकाओं की सूची</u> :-

	पत्रिका का नाम	प्रकाशक/प्रकाशन
1.	सेंड़ा सेतेङ	नवीन मुण्डू
2.	आदिवासी	बिहार सरकार, राँची
3.	मरसल	निरल एनेम होरो
4.	जवा डालि	त्रिमासिक पत्रिका, राँची
5.	एयोन	राँची
6.	सरना सकम	भइयाराम मुण्डा
7.	जगर साड़ा	एस०के० बागे
8.	जोहार	स०अ०व०दि० हँस
9.	नितिर सकम	एस०के० बागे
10.	बिहान पत्रिका	बुण्डू
11.	सनङ	सिलास हेमरोम
12.	संगोम	डॉ० विरेन्द्र कुमार सोय
13.	डहर	छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ
14.	बाः गहनालङ	राँची
15.	सम्पड़ातिङ	स०अ०व०दि० हँस